RNI Title Code : MPBIL02445

सेवा मंथन

वर्ष 2 अंक 16 (पाक्षिक) इन्दौर, 16 से 31 अगस्त 2022 पृष्ठ 8 मूल्य 10

देवेंद्र फडणवीस संभालेंगे गृह और वित्त मंत्रालय

मुंबई। महाराष्ट्र में मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने अपने मंत्रिमंडल का विस्तार किया था। 18 नए मंत्रियों ने शपथ ग्रहण ली थी। हालांकि, उनके विभागों का बंटवारा नहीं हुआ था। विभागों का बंटवारा भी कर दिया गया है। खबर के मुताबिक उप मुख्यमंत्री और भाजपा के वरिष्ठ नेता देवेंद्र फडणवीस फिलहाल महाराष्ट्र में गृह और वित्त मंत्रालय संभालेंगे। अपने आप में यह दोनों मंत्रालय बेहद महत्वपूर्ण माने जाते हैं। वही, मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे के पास पीडब्ल्यूडी और शहरी विकास विभाग रहेगा। भाजपा के पूर्व प्रदेश अध्यक्ष और हाल में ही मंत्री बने चंद्रकांत पाटील उच्च शिक्षा मंत्रालय की जिम्मेदारी संभालेंगे। वहीं सुधीर मुनगंटीवार को वन विभाग मिला है। अब्दुल सत्तार कृषि मंत्रालय संभालेंगे।

इससे पहले महाराष्ट्र के उप मुख्यमंत्री देवेंद्र फडणवीस ने कहा था कि राज्य में नव नियुक्त मंत्रियों को जल्द उनके विभाग सौंपे जाएंगे। उन्होंने इसके साथ ही भरोसा दिलाया कि सरकार भारी बारिश की वजह से फसलों को हुए नुकसान के लिए राज्य के किसानों को जल्द ही मुआवजा देगी। फडणवीस ने चंद्रशेखर बावनकुले को भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) की महाराष्ट्र इकाई का अध्यक्ष नियुक्त होने पर बधाई भी दी। उन्होंने एक सवाल के जवाब में कहा, "नए मंत्रियों को जल्द ही प्रभार सौंपे जाएंगे।"

'देश के लिए समर्पित होना चाहिए हमारा जीवन'-मोहन भागवत

मुंबई। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ (आरएसएस) प्रमुख मोहन भागवत ने बड़ा बयान दिया है। नागपुर में 'उत्कृष्ट भारत' कार्यक्रम के दौरान आरएसएस प्रमुख ने कहा कि हम अलग दिख सकते हैं। हम अलग-अलग चीजें खा सकते हैं। लेकिन अस्तित्व में एकता है। हमें आगे कुछ ऐसे बढ़ना है जो दुनिया भारत से सीख सकती है। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि समाज और देश के लिए काम करने का संकल्प लें। हम देश के लिए फांसी पर चढ़ेंगे। हम देश के लिए काम करेंगे। हम भारत के लिए गीत गाएंगे। उन्होंने साफ तौर पर कहा कि जीवन भारत को समर्पित होना चाहिए।

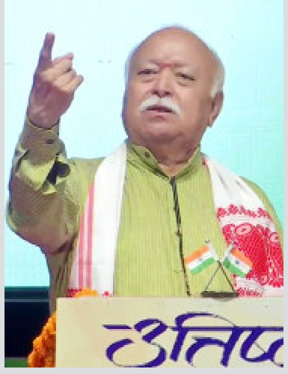

मोहन भागवत ने आगे कहा कि भारत जिस तरीके से विविधता को समेटे हुए है, उसके लिए दुनिया उसकी सराहना करती है। इसके साथ ही अपने संबोधन में उन्होंने कहा कि जब विविधता को प्रभावी तरीके से आत्मसात करने की बात आती है, तो दुनिया भारत की ओर देखती है। दुनिया विरोधाभासों से भरी हुई लेकिन द्वंद्व से निपटने का हुनर केवल भारत के पास है। भागवत ने कहा कि कई ऐतिहासिक घटनाएं रही हैं, जो हमें कभी नहीं बतायी गयी और न ही उचित तरीके से कभी पढ़ाई गयी। उन्होंने कहा कि उदाहरण के लिए संस्कृत का व्याकरण जिस स्थान से उपजा, वह भारत में नहीं है। क्या हमने कभी सवाल पूछा कि क्यों?

आरएसएस प्रमुख ने कहा कि यह मुख्य रूप से इसलिए हुआ क्योंकि सबसे पहले हम अपना विवेक और ज्ञान भूल गए और बाद में हमारी जमीन पर विदेशी आक्रमणकर्ताओं ने कब्जा कर लिया जो मुख्यतः उत्तर पश्चिम क्षेत्र से आए थे। हम अनावश्यक रूप से जाति और अन्य ऐसी ही व्यवस्थाओं को महत्व देते हैं। उन्होंने कहा कि काम के लिए बनायी व्यवस्था का इस्तेमाल लोगों तथा समुदायों के बीच मतभेद पैदा करने के लिए किया गया। उन्होंने कहा कि हमारी भाषा, वेशभूषा, संस्कृतियों में मामूली अंतर हैं लेकिन हमें वृहद तस्वीर देखने तथा इन चीजों पर अटके नहीं रहने की समझ बनानी होगी। आरएसएस प्रमुख ने कहा कि देश में सभी भाषाएं राष्ट्रीय भाषाएं हैं, विभिन्न जाति के सभी लोग मेरे हैं, हमें ऐसा प्रेम दिखाने की जरूरत है।

प्रधानमंत्री के लिए अब भी 53% लोगों की पसंद नरेंद्र मोदी

नई दिल्ली। भले ही देश में बेरोजगारी और महंगाई जैसे मुद्दों को लेकर विपक्ष सरकार पर हमलावर है, लेकिन आज भी देश का मूड पीएम नरेंद्र मोदी के साथ है। देश के प्रधानमंत्री के चेहरे के लिए हुए सर्वे में एक बार फिर से नरेंद्र मोदी सबसे बड़ी पसंद हैं।

53 फीसदी लोग एक बार फिर से पीएम नरेंद्र मोदी को ही देश का पीएम बनते देखना चाहते हैं। इंडिया टुडे और सी-वोटर की ओर से किए गए सर्वे में यह बात सामने आई है। सर्वे में 53 फीसदी लोगों ने पीएम मोदी को अपनी पसंद बताया तो कांग्रेस के राहुल गांधी को 9 फीसदी लोग ही पीएम देखना चाहते हैं। तीसरे नंबर पर अरविंद केजरीवाल हैं, जिन्हें 7 पर्सेंट लोगों ने अपनी पसंद बताया है।

शशि थरूर फ्रांस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान से सम्मानित होंगे

नई दिल्ली। कांग्रेस के सीनियर नेता शशि थरूर को फ्रांस के सर्वोच्च नागरिक सम्मान 'शेवेलियर दी ला लीजन दी ऑनर' से सम्मानित किया जाएगा। फ्रांस की सरकार थरूर के लेखन और भाषणों के चलते उन्हें इस सम्मान से नवाज रही है। भारत में फ्रांस के राजदूत इमैनुएल लेनेन ने थरूर को लिखित रूप से इस सम्मान के बारे में जानकारी दी।शशि थरूर ने ट्वीट करके कहा कि 'फ्रांस के साथ

रिश्तों को महत्व देने वाले, भाषा से प्यार करने वाले और संस्कृति की प्रशंसा करने वाले व्यक्ति के रूप में मैं इस तरह से सम्मान दिए जाने को लेकर गौरवान्वित महसूस कर रहा हूं। मैं उन लोगों का आभार प्रकट करता हूं, जिन्होंने मुझे इस सम्मान के लायक समझा।'

राजवाड़ा चौक पर 15 अगस्त 2022 को गोल्ड कॉईन सेवा ट्रस्ट द्वारा स्वतंत्रता दिवस का कार्यक्रम आयोजित किया गया था जिसमें देशभक्ति के गीतों प्रस्तुति दी गई। महिलाओं और युवक - युवतियों ने देशभक्ति के गीतों पर डांस करके कार्यक्रम को और आनंदित किया। राजवाड़ा पर आने जाने वाले वाहनों पर राष्ट्रीय प्रतीक चिन्ह के स्टीकर लगाए गए एवं झंडो का वितरण किया गया सभी को मिठाई बांटकर स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाएं दी गई। इस अवसर पर एडिशनल डी.सी.पी. प्रशांत चौबे जी भी उपस्थित थे एवं उनके द्वारा देशभक्ति के गीत गाए गए जिस पर उपस्थित लोगों ने डांस मस्ती के साथ ही ए.सी.पी जयंती राठौर जी, ए.सी.पी. तोमर जी, ए.सी.पी परिहार जी भी कार्यक्रम में शामिल हुए कार्यक्रम में गोल्ड कॉईन सेवा ट्रस्ट द्वारा संचालित दशरथ सेवाश्रम के बुजुर्गों द्वारा ध्वजारोहण किया गया था।

तिरंगा संभाल कर रखें-महापौर पुष्यमित्र भार्गव

इंदौर। आज़ादी के 75वें अमृत महोत्सव वर्ष के इंदौर सहित देशभर में हर घर तिरंगा अभियान के तहत अधिकांश लोगों ने अपने घरों व प्रतिष्ठानों पर तिरंगा लगाया है। स्वतंत्रता दिवस बीतने के पश्चात कई लोग इन तिरंगों पर ध्यान नहीं देते हैं। इसके कारण कई बार तिरंगे फट जाते हैं, तो कहीं सड़कों पर गिर जाते हैं। ऐसे में शहर के महापौर पुष्यमित्र भार्गव ने शहरवासियों से आज तिरंगे को सम्मानपूर्वक संभाल कर रखने का अनुरोध किया है।

उन्होंने कहा कि हम सभी ने मिलकर हर्ष-उल्लास के साथ 15 अगस्त को भारत के सबसे बड़े राष्ट्रीय महापर्व स्वतंत्रता दिवस का जश्न उत्साहपूर्वक जनभागीदारी के साथ मनाया है। शहर के निजी प्रतिष्ठानों से लेकर हर गली-मोहल्लों और यहां तक कि घरों पर भी हमने हमारी राष्ट्रीय पहचान का प्रतीक तिरंगा झंडा लहराया है। हमने अद्भुत दृश्य भी देखा कि छोटे-छोटे बच्चे हाथों में तिरंगा लेकर स्कूल जा रहे हैं, देश भक्ति के गीत, कविताएं गा रहे हैं, युवा तरुणाई अपने वाहनों पर राष्ट्र के गौरव तिरंगा ध्वज लगाकर जोशीले अन्दाज़ में नगर भ्रमण कर देशभक्ति की गौरव गाथा प्रदर्शित कर रहे हैं।

महापौर भार्गव ने कहा कि देशप्रेमी, उत्सव प्रेमी, संस्कृति प्रेमी शहर के नागरिकों में आप सभी से आग्रहपूर्वक एक अपेक्षा और अनुरोध करता हूं कि स्वतंत्रता दिवस के अगले दिन सभी लोग अपने लहराए गए तिरंगा को संभाल कर रखें। जिस तिरंगे की आन, बान और शान के लिए हज़ारों स्वतंत्रता सेनानियों ने अपने प्राणों को न्योछावर कर भारतवासियों को आज़ादी का अमृत दिया है। अनेक बार यह देखने में आया है कि 15 अगस्त के महापर्व के बाद राष्ट्रध्वज को वहीं छोड़ कर चले जाते हैं....कई बार ध्वज फटा हुआ.... या फिर जमीन पर गिरा हुआ दिखाई देता है।

मेरे प्यारे शहरवासियों यह दृश्य व्यक्तिगत रूप से मुझे ही नहीं बल्कि हम सबको आहत करता है क्योंकि यह महज़ एक ध्वज ही नहीं बल्कि 130 करोड़ भारतवासियों के स्वाभिमान का प्रतीक है। चंद्रशेखर आजाद, रामप्रसाद बिस्मिल, भगतसिंह, सुखदेव, राष्ट्र नायक सुभाषचंद्र बोस और लाखों स्वाधीनता संग्राम सेनानियों के बलिदान की स्मृति है। हमारी राष्ट्रीय एकात्मता और गणतंत्र का प्रतीक भी है। महापौर ने अपील की है कि अब हम सब शहरवासियों का दायित्व है कि घर-घर लहराए गए तिरंगे को उसी अवस्था में नहीं छोड़कर उचित सम्मान, और संस्कार के साथ व्यवस्थित स्वरूप में ही रखें। चिंता करें कि अगर हमारा ध्वज लहरा रहा है तो उसकी गरिमा और सम्मान कायम रहे।

सफाईकर्मी से करवाया ध्वजारोहण

महापौर भार्गव ने अपनी कालोनी सुदामा नगर में सफाईकर्मी महिला अर्चना खरे से ध्वजारोहण करवाया। यह महिला रोज कालोनी में सफाई करती है। ध्वजारोहण करते हुए अर्चना के आंसू छलक आए। उसने कहा ये खुशी के आंसू हैं।

शिक्षकों की सहकारी संस्था में अब पांच लाख तक मिल सकेगा ऋण

इंदौर। सहकारी कार्य संस्था शिक्षा विभाग मध्यप्रदेश मर्यादित इंदौर (शिक्षक पेढ़ी) ने सदस्यों की सुविधा को ध्यान में रखते हुए ऋण की सीमा तीन लाख से बढ़ाकर पांच लाख रुपये तक कर दी है। इस संबंध में संस्था के संचालक मंडल ने सह निर्णय लिया है । पूर्व समय में सदस्य तीन लाख तक ही लोन ले पाते थे।

यह शिक्षकों के लिए सबसे पुरानी संस्था है। इसमें इंदौर के अलावा प्रदेश के धार, बड़वानी, देवास, व अन्य शहरों के भी सदस्य शामिल हैं। वर्ष 2021 में सहयोग पैनल के निर्वाचित संचालक मंडल ने कार्यभार लेने के एक वर्ष के भीतर ही अपना वादा पूरा किया। रविवार को पांच लाख रुपये का चेक सदस्य भारती उपाध्याय को सौंपा गया। इस मौके पर संस्था के अध्यक्ष महेंद्र शर्मा, उपाध्यक्ष सुलेखा शुक्ला, रमेशचंद्र निनामा, सचिव राजेंद्र आचार्य, सहसचिव मोहन बैरागी, वरिष्ठ संचालक भगवतीप्रसाद पंडित, संचालक राजेंद्र मकवानी, आलोक परमार, घनश्याम करोले, सौभागसिंह ठाकुर और अरुणा अवस्थी आदि मौजूद थे। पदाधिकारियों ने इस सुविधा की शुरुआत करते हुए संस्था को उत्तरोत्तर आगे ले जाने का निर्णय लिया।

उल्लेखनीय है कि शिक्षक पेढ़ी के संचालक मंडल ने हाल ही में शिक्षक संवर्ग के समस्त अध्यापक वर्ग जिनका संविलियन शिक्षा विभाग में हो गया है, उन्हें सदस्य बनाने के लिए आयु सीमा भी 50 वर्ष कर दी है। पहले 45 वर्ष आयु के शिक्षक ही सदस्य बन पाते थे, किंतु साथी शिक्षकों की मांग को ध्यान में रखते हुए यह निर्णय लिया गया है। अब अधिक से अधिक शिक्षक साथी सहकारिता के माध्यम से आर्थिक और सामाजिक रूप से उन्नति कर सकेंगे। नियमित सदस्यों को ऋण समायोजन की सुविधा भी लागू कर दी गई है। नवीन सदस्यों को भी त्वरित ऋण लेने की सुविधा प्रदान की गई है। संचालक मंडल ने सभी सदस्यों एवं शिक्षकों से लाभ लेने की अपील की है।

इंदौर स्टार्टअप को स्टार्ट करने के लिए बनेगा आई हब

इंदौर। इंदौर को स्टार्टअप राजधानी बनाने के लिए एक और कदम बढ़ाया गया है। एमएसएमई विभाग ने इंदौर में एक आई-हब बनाने की योजना तैयार की है। यह स्टार्टअप के लिए एक कॉमन गतिविधि केंद्र होगा, जहां इन्वेस्टर, इन्क्यूबेटर, एक्सलेरेटर व मेंटर का कॉमन प्लेटफॉर्म रहेगा। इससे स्टार्टअप को विकसित करने के लिए जरूरी सुविधाएं दी जा सकेंगी। यहां से सभी इन्क्यूबेशन सेंटर की गतिविधियां भी संचालित की जाएंगी। मालूम हो, स्टार्टअप के लिए इन्क्यूबेशन सेंटर के साथ अन्य गतिविधियों को भी जोड ? की जरूरत को देखते हुए विभाग ने इस केंद्र की कल्पना की है। इससे स्टार्टअप की प्लानिंग करने वाले व्यक्ति को सभी सुविधाएं एक जगह पर मिल जाएंगी। विभाग ने करीब 10 हजार वर्गफुट की निर्मित स्पेस के लिए आइडीए, एमपीआइडीसी, एमपीइडीसी व अन्य को पत्र लिखा है। इस केंद्र पर सभी तरह की एक्सपर्ट सुविधाएं होंगी। कॉमन फेसेलिटी सेंटर होंगे। कॉन्फ्रेंस व इन्टरेक्शन हॉल होगा, जहां स्टार्टअप के लिए आइडिया इन्क्यूबेशन, मार्केटिंग, पिचिंग जैसी गतिविधियां होंगी। इससे स्टार्टअप आइडिया

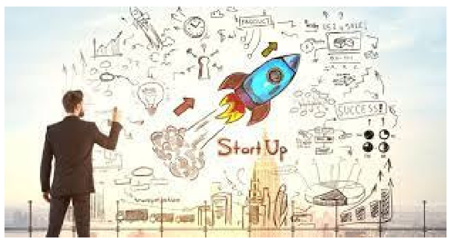

को गति मिल सकेगी।

इसलिए होगा महत्वपूर्ण- यह केंद्र निवेशक व स्टार्टअप के बीच भी एक कड़ी बनेगा। निवेशक स्टार्टअप को समझकर अपना निवेश प्लान तय कर सकेंगे और स्टार्टअप उनका क्रियान्वयन कर सकेंगे। वर्कशॉप के माध्यम से सभी क्षेत्र के स्टार्टअप से एक जगह संवाद किया जा सकेगा।

सरकार का विशेष ध्यान- प्रदेश में स्टार्टअप विकास में निवेशकों की अच्छी रुचि को देखते हुए सरकार का फोकस अब आइटी के साथ सभी क्षेत्रों को विकसित करने पर है। इसके लिए एमएसएमई विभाग ने स्टार्टअप नीति की घोषणा की है। सरकार का जोर आइडिया इन्क्यूबेशन के साथ स्टार्टअप को विकसित करने पर है। इसके लिए इको सिस्टम बनाने के लिए काम शुरू कर दिया गया है। इन्क्यूबेशन सेंटर स्थापित किए जा रहे हैं।

इनका कहना है- विभाग ने आई-हब बनाने की योजना तैयार की है। यह स्टार्टअप के लिए एक कॉमन गतिविधि केंद्र होगा। जहां पर इनोवेटर, इन्वेस्टर व मेंटर सभी मिल सकेंगे। इंदौर में जगह देख रहे हैं। प्रशासन व अन्य विभागों को पत्र लिखकर जगह मांगी है।

-पी. नरहरि, सचिव, एमएसएमई

इंदौर के एससी-एसटी के हजारों छात्रों की दो साल से रुकी है छात्रवृत्ति

इंदौर। उच्च शिक्षा विभाग से इंदौर जिले के अनुसूचित जाति एवं जनजाति (अजा-जजा) वर्ग के करीब सात हजार विद्यार्थियों को एक साल पुरानी छात्रवृत्ति भी नहीं मिल पाई है। इनमें 500 विद्यार्थी तो ऐसे हैं जिन्हें दो साल से छात्रवृत्ति नहीं मिली है। राज्य शासन से बजट का आवंटन न मिलने से यह हालात बने हैं। इनमें कुछ प्रकरण तकनीकी कमियों के कारण भी रुके पड़े हैं।

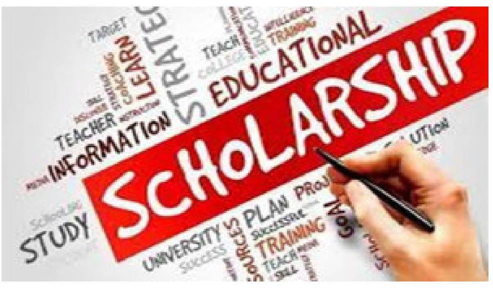

आदिम जाति कल्याण विभाग के सहायक संचालक बीके शुक्ला का कहना है कि शासन ने इस साल से पब्लिक फाइनेंस मैनेजमेंट सिस्टम (पीएफएमएस) शुरू किया है। सभी विद्यार्थियों को इसी सिस्टम के जरिए सीधे उनके खाते में छात्रवृत्ति भेजी जा रही है। इस सिस्टम में कुछ तकनीकी दिक्कतों के कारण विद्यार्थियों को छात्रवृत्ति मिलने में मुश्किल आती है। हमारी तरफ से कोई देरी नहीं होती। शैक्षणिक संस्थान की ओर से पात्र विद्यार्थियों की जानकारी मिलते ही हमारी ओर से सत्यापन करके आनलाइन ही मंजूरी दे दी जाती है। इसके बाद विद्यार्थी के बैंक खाते में छात्रवृत्ति भेज दी जाती है। बताया जाता है कि इंदौर में अजा-जजा वर्ग के विद्यार्थियों की करोड़ों रुपये की छात्रवृत्ति रुकी हुई है। छात्रवृत्ति हासिल करने के लिए ये छात्र सीएम हेल्पलाइन से लेकर जनसुनवाई में शिकायतें कर रहे हैं, लेकिन उनकी अर्जियां इसलिए दम तोड़ देती हैं कि शासन के पास शायद धन की कमी है।

मप्र का एजुकेशन हब है इंदौर - दरअसल, इंदौर मध्य प्रदेश का एजुकेशन हब है, इसलिए उच्च शिक्षा के लिए सर्वाधिक विद्यार्थी भी यहीं आते हैं। इसमें इंदौर संभाग के आठ जिलों के अलावा उज्जैन, भोपाल आदि संभागों के जिलों के विद्यार्थी भी शामिल हैं। छात्रवृत्ति के अधिकांश प्रकरण शिक्षा सत्र 2021-22 के हैं। इसके अलावा वर्ष 2020-21 के भी कुछ प्रकरण अटके हुए हैं। अधिकारियों का कहना है कि दो साल पुराने अधिकांश प्रकरण ऐसे हैं जिनमें कालेज या विद्यार्थियों की ओर से दस्तावेजों की कमी है। ऐसे में इन प्रकरणों का सत्यापन नहीं हो पा रहा है। इसके लिए संबंधित कालेज को दस्तावेजों की पूर्ति के निर्देश समय-समय पर दिए जाते हैं।

मौसम में बदलाव के साथ इंदौर में पैर पसारने लगा डेंगू और मलेरिया

इंदौर। मौसम में बदलाव के साथ मच्छरों का प्रकोप तेजी से बढ़ने लगा है। यह मच्छरों के लिए अनुकूल मौसम है। इस मौसम में मच्छरों के काटने से होने वाली बीमारियां जैसे मलेरिया-डेंगू तेजी से फैलती हैं। इनसे बचने का सबसे आसान तरीका है कि अपने आसपास मच्छरों को पनपने ही नहीं दिया जाए। मच्छर वहां पैदा होते हैं जहां पानी जमा होता है। घरों में गमला, कूलर, टायर आदि कई वस्तुएं हैं जिनमें आसानी से पानी जमा हो जाता है।

जिला मलेरिया अधिकारी डा. दौलत पटेल ने बताया कि अक्सर देखने में आता है कि मलेरिया और डेंगू को लेकर लोग लापरवाही बरतते हैं। यह अनदेखी कई बार महंगी पड़ती है। शासकीय अस्पतालों और डिस्पेंसरी में इन बीमारियों की जांच की निश्शुल्क व्यवस्था है। जरूरत है हमें खुद अपने आपको जागरूक और सजग बनाए रखने की। स्वास्थ्य विभाग ने इन बीमारियों से बचने के लिए एडवायजरी जारी की है।

बीस हजार रैंक तक के विद्यार्थियों को मिल सकता है मनपसंद इंजीनियरिंग कालेज

इंदौर। मध्य प्रदेश के करीब 150 इंजीनियरिंग कालेजों की तकरीबन 44 हजार सीटों पर प्रवेश प्रक्रिया 5 अगस्त से शुरू हो चुकी है। जेईई मेन के दूसरे चरण के परिणाम आने के बाद तकनीकी पाठ्यक्रमों में प्रवेश प्रक्रिया को गति मिल गई है। अब डायरेक्टोरेट आफ टेक्निकल एजुकेशन (डीटीई) प्रक्रिया बिना किसी परेशानी से कर सकेगा।

इस बार जेईई मेन लेट होने से विद्यार्थी और माता-पिता चिंतित थे कि प्रवेश प्रक्रिया लेट होगी और इसका असर पढ़ाई पर पड़ेगा। काउंसलिंग के पहले चरण के तहत 5 अगस्त से पंजीयन शुरू हुए जो 27 अगस्त तक जारी रहेंगे। कालेजों और ब्रांच का चयन 12 अगस्त से किया जा सकेगा। कामन मेरिट लिस्ट एक सितंबर को जारी की जाएगी। विद्यार्थियों को प्रवेश मिलने पर अलाटमेंट पत्र 6 सितंबर को जारी किया जाएगा। पंजीयन के लिए विद्यार्थियों को 1530 रुपये खर्च आएगा। इस बार 10 प्रतिशत सीट ईडब्ल्यूएस की आरक्षित रहेगी। प्रवेश प्रक्रिया की शुरुआत जेईई मेन में मिली रैंक के आधार पर होगी। काउंसलिंग के अंतिम चरण में 12वीं के अंकों के आधार पर प्रवेश दिया जाएगा।

शहर के बेहतर संस्थानों में मिल सकता है प्रवेश - विभिन्न कालेजों के पिछले वर्षो के कटआफ को देखें तो प्रदेश के टाप संस्थान श्री गोविंदराम सेकसरिया प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (एसजीएसआइटीएस) की कंप्यूटर साइंस ब्रांच में जेईई मेन की करीब 20 हजार रैंक तक के विद्यार्थियों को प्रवेश मिल गया था। इसके आसपास ही देवी अहिल्या विश्वविद्यालय के इंस्टीट्यूट आफ इंजीनियरिंग एंड टेक्नोलाजी

(आईईटी) और राजीव गांधी प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (आरजीपीवी) में भी टाप ब्रांच में प्रवेश मिला था। इसे देखते हुए इस बार भी अनुमान लगाया जा रहा है कि जो विद्यार्थी जेईई मेन में 20 हजार रैंक के अंदर हैं उन्हें शहर के बेहतर संस्थानों में प्रवेश मिल सकता है।

इलेक्ट्रानिक्स ब्रांच में बढ़ेगी मांग- कंप्यूटर साइंस और आइटी के साथ ही अब इलेक्ट्रानिक्स ब्रांच की ओर विद्यार्थियों का रुझान बढ़ रहा है। इसका कारण यह है कि अब इलेक्ट्रानिक्स आधारित नए उपकरणों की जरूरत महसूस हो रही है। आर्टिफिशियल इंटेलीजेंस और मशीन लर्निंग जैसी तकनीकों के लिए भी नए उपकरणों की जरूरत पड़ रही है। सभी तरह के उद्योग आटोमेशन पर आ गए हैं। सेंसर तकनीकी भी आटोमोबाइल से लेकर स्मार्ट होम तक बढ़ जाने से इलेक्ट्रानिक्स क्षेत्र में युवाओं की जरूरत बढ़ रही है। ट्रेनिंग एंड प्लेसमेंट अधिकारी अतुल भरत का कहना है कि इस समय जो विद्यार्थी कालेजों में प्रवेश ले रहे हैं उन्हें यह बात भी ध्यान रखनी चाहिए कि कंप्यूटर साइंस ही एकमात्र ब्रांच नहीं है जिसमें बढ़ोतरी हो रही है। जब वे कालेजों से पास होंगे तब कौन सी तकनीक की मांग होगी इसका अंदाजा लगाना चाहिए। जिस तरह से दुनियाभर में इलेक्ट्रानिक्स क्षेत्र तेजी से ऊपर जा रहा है उससे अंदाजा लगाया जा सकता है कि आने वाले समय में इस क्षेत्र में काफी बेहतर मांग बनेगी।

विद्यार्थियों को मिला ब्रांच बदलने का विकल्प- एसजीएसआइटीएस ने पिछले वर्ष प्रवेश लेने वाले अपने विद्यार्थियों को ब्रांच बदलने का विकल्प दिया है। इसके तहत जिन ब्रांच में सीटें खाली हैं, उसमें विद्यार्थी जा सकते हैं। इसके लिए 10 अगस्त से 25 अगस्त के बीच आवेदन किए जा सकते हैं। विद्यार्थियों को खाली सीटों की जानकारी लेने और आवेदन करने के लिए संस्थान के पोर्टल पर जाना होगा। ब्रांच अपग्रेडेशन के लिए विद्यार्थियों को 500 रुपये शुल्क देना होगा। नई ब्रांच की जानकारी 28 अगस्त को जारी की जाएगी।

जीएसटी पंजीयन के लिए सिर्फ तीन दस्तावेजों के साथ मोबाइल नंबर और ईमेल ही जरूरी

इंदौर। प्रदेश के व्यवसायियों को जीएसटी का पंजीयन हासिल करने के लिए अब सिर्फ तीन दस्तावेजों के साथ मोबाइल नंबर और ई-मेल एड्रेस देना ही पर्याप्त होगा। वाणिज्यिककर विभाग (स्टेट जीएसटी) ने जीएसटी पंजीयन के लिए स्टेंडर्ड आपरेटिंग प्रोसिजर (एसओपी) जारी कर दिया है।

बीते समय से जीएसटी पंजीयन देने और निरस्ती के तरीके पर व्यापारी और कर सलाहकार लगातार सवाल उठा रहे थे। जीएसटी पंजीयन की जांच और निरस्ती करने पर दो विभागीय अधिकारियों पर कार्रवाई भी हुई। असमंजस और सवालों के बीच विभाग ने एसओपी जारी कर प्रक्रिया में एकरूपता लाने और विवाद समाप्त करने की पहल की है। नई आदर्श प्रक्रिया में अब सिर्फ आवेदक का पैन, आधार, मोबाइल नंबर, मेल आइडी एवं व्यावसायिक स्थल के प्रमाण के आधार पर ही जीएसटी पंजीयन जारी किया जाएगा।

अतिरिक्त दस्तावेज के लिए नहीं होना पड़ेगा बाध्य - वाणिज्यिककर विभाग के आयुक्त लोकेश कुमार जाटव ने विभाग के अधिकारियों को जीएसटी रजिस्ट्रेशन के आवेदन के साथ संलग्न किए जाने योग्य दस्तावेज, व्यवसाय की प्रकृति के अनुसार सुनिश्चित करने के लिए निर्देशित किया है। इन दस्तावेज का सत्यापन स्वयं अधिकारियों द्वारा अलग-अलग विभागों की वेबसाइट से किस प्रकार किया जाना चाहिए, इसके संबंध में भी दिशा निर्देश दिए गए हैं। स्पष्ट कर दिया गया है कि व्यवसायियों को पंजीयन हासिल करने के लिए अब अतिरिक्त दस्तावेज प्रस्तुत करने के लिए बाध्य नहीं होना पड़ेगा। इससे पंजीयन जारी करने की प्रक्रिया जल्दी पूरी हो सकेगी।

भाई ने 47 साल से राखी नहीं बंधवाई, इंदौर के 47 पुलिसकर्मियों ने बनाया बहन

इंदौर। सगे भाई ने राखी पर बड़ी बहन से मुंह मोड़ लिया। नाराज बहन घर छोड़ कर आश्रम जाने पर अड़ गई। इंदौर के एक टीआई ने उससे न सिर्फ राखी बंधवाई बल्कि प्रत्येक साल के हिसाब से 47 पुलिसकर्मियों से भी राखी बंधवाई। मुंह मीठा करवाया और उपहार भी भेंट किए।

मनावर निवासी 47 वर्षीय लीला शुक्रवार को भाई से नाराज होकर घर छोड़ आई। तीन बहनों में बड़ी लीला से भाई ने कभी राखी नहीं बंधवाई थी। इस बार उसने वृद्धाश्रम रहने का फैसला किया और दो जोड़ी कपड़े लेकर घर से निकल गई। आश्रम की तलाश में इंदौर आई लीला को नौलखा बस स्टैंड पर रोता देख बस चालकों ने टीआई तहजीब काजी को बुलाया। महिला कांस्टेबल ने काउंसलिंग कर बातचीत की तो लीला ने बताया कि जो भाई उसे बहन नहीं मानता उसके पास रहना भी उचित नहीं है। टीआई ने थाने में रक्षा बंधन का पर्व मनाया और लीला से राखी बंधवाई। टीआई को राखी बांध लीला की आंखें भर आई और कहा कि उसने 47 साल से राखी नहीं बांधी थी। टीआई ने 47 पुलिसकर्मी एकत्र किए और बारी-बारी से लीला से राखी बंधवाई। किसी ने बड़ी तो किसी ने छोटी बहन समझ कर उपहार भी भेंट किए और ससम्मान वृद्धाश्रम छोड़ा।

लोक अदालत में दी गई 1.20 करोड़ रुपये की छूट, बिजली के 3175 प्रकरण निराकृत

इंदौर। नेशनल लोक अदालत में मप्र पश्चिम क्षेत्र विद्युत वितरण कंपनी (मप्रपक्षेविविकं) को आशातीत सफलता मिली है। कंपनी के 3175 प्रकरण निराकृत हुए है। नियमानुसार करीब 1.20 करोड़ रुपये की छूट उपभोक्ताओं, प्रकरणों के निराकरण पर दी गई है। लोक अदालत के दौरान कंपनी को 4.80 करोड़ रुपये का राजस्व प्राप्त हुआ है। मप्रपक्षेविविकं ने प्रबंध निदेशक अमित तोमर ने निर्देश पर कंपनी क्षेत्र के 425 जोन, वितरण केंद्रों, कार्यालयों के माध्यम से लोक अदालत की सफलता के लिए प्रभावी तैयारी की थी।

'आईआईटी इंदौर में होंगे 1400 करोड़ रुपये के विकास कार्य'

इंदौर। भारतीय प्रौद्योगिकी संस्थान (आईआईटी) इंदौर परिसर को लगातार विकसित किया जा रहा है। 500 एकड़ परिसर में दूसरे चरण के तहत कार्य पूर्ण हो चुका है। इसमें 31 बिल्डिंग तैयार की गई हैं। अब तीसरे चरण का काम शुरू होगा। इसमें 1400 करोड़ रुपये खर्च होंगे। संस्थान को जयप्रकाश नारायण नेशनल सेंटर फार एक्सीलेंस इन ह्यूमेनिटीज का दर्जा भी मिल गया है। परिसर में अमृत सरोवर भी बनाया जाएगा। इसमें जागिंग ट्रैक, प्राकृतिक एम्फीथिएटर और लैंडस्केपिंग के साथ 100 मीटर व्यास की झील बनाई जाएगी। संस्थान ने 83 पेटेंट के लिए आवेदन किया था। इसमें से 19 पेटेंट प्राप्त हो चुके हैं। उज्जैन में सैटेलाइट परिसर बनाने के लिए केंद्र और राज्य सरकार को प्रस्ताव दिया जा चुका है।

आईआईटी इंदौर के 10वें दीक्षा समारोह में यह जानकारी संस्थान के निदेशक डा. सुहास जोशी ने दी।

कार्यक्रम में भारत के परमाणु ऊर्जा आयोग के पूर्व अध्यक्ष पद्म विभूषण डा. अनिल काकोडकर मुख्य अतिथि थे। वे वर्चुअल रूप से समारोह में शामिल हुए। डा. काकोडकर ने कहा कि आईआईटी जैसे संस्थान से शिक्षा

प्राप्त करने वाले विद्यार्थी समाज को लाभ पहुंचाने वाले शोध कार्यो से जुड़ें। कार्यक्रम की अध्यक्षता आईआईटी इंदौर के बोर्ड आफ गवर्निंग के अध्यक्ष प्रो. दीपक बी फाटक ने की।

490 विद्यार्थियों को मिली डिग्री - समारोह में कुल 490 विद्यार्थियों को डिग्री प्रदान की गई। इसमें 111 छात्राएं शामिल हैं। सबसे ज्यादा बीटेक के 269, पीएचडी के 61, एमएससी के 88, एमटेक के 65 और एमएस के सात विद्यार्थी शामिल थे। इलेक्ट्रिकल इंजीनियरिंग के विद्यार्थी दन्यल शाहिद शम्सी को राष्ट्रपति स्वर्ण पदक से सम्मानित किया गया। इसके अलावा अंकिता मंडल को बूटी फाउंडेशन स्वर्ण पदक और कंप्यूटर साइंस इंजीनियरिंग से पीएचडी करने वाली छात्रा प्रीति झा को स्वर्ण पदक दिया गया। मुकाला जोगेश कुमार ने सर्वश्रेष्ठ आल राउंडर प्रदर्शन के लिए रजत पदक प्राप्त किया।

डा. सुहास जोशी ने कहा कि हमारा डाटा साइंस कार्यक्रम आईआईएम इंदौर के साथ मिलकर संचालित किया जा रहा है। आईआईटी इंदौर में डाटा सिक्यूरिटी का भी छह महीने का कोर्स संचालित किया जा रहा है। यूनेस्को के साथ संस्थान ग्लोबल पेंडेमिक हब पर भी काम कर रहा है। कैंसर के उपचार के लिए भी काम कर रहे हैं। टाटा मेमोरियल अस्पताल मुंबई के साथ मिलकर दवाई पर फाइनल ट्रायल चल रहे हैं। डा. दीपक बी फाटक ने कहा आईआईटी इंदौर में अब दो हजार से ज्यादा विद्यार्थी हो गए हैं।

Great Women Ahilyabai Holkar

The history of India has its own share of great women, throughout the ages who played a significant role as rulers, poets, warriors. Be it the Gond queen Rani Durgavati who defied the mighty Mughal army of Emperor Akbar, or the brave Rani Laxmibai of Jhansi who fought against the British their deeds were a part of folklore and history. In such an illustrious pantheon, there was Ahilyabai Holkar, the daughter in law of Malhar Rao Holkar, the founder of the Holkar kingdom. Widowed at a young age, took over as queen, she takes her place in history among other great queens like Catherine II of Russia, Elizabeth I of England and Margaret I of Denmark. Known for her wisdom and administrative ability she rebuilt many Hindu temples, offered facilities for pilgrims, and built a new capital at Maheswar on the banks of the Narmada.

On the 31st of May, 1725, Ahilyabai was born in the Ahmednagar district of Maharashtra to a Dhangar village patil Malkoji Shinde. Though she did not go to school, nevertheless her father taught her to read and write at home. Fortune unexpectedly came her way, when the ruler of Malwa, Malharrao Holkar stopped at her village on his way to Pune and saw the 8 year old girl at a temple. Impressed by her piety, he took her home as a bride for his son Khande Rao. Married in 1733, tragedy struck Ahilyabhai when her husband was killed in the Siege of Kumher fort by a cannonball. It's believed a grief stricken Ahilyabai wanted to commit Sati, but her father in law dissuaded her, saying she was needed more than ever now, as there was no male heir, and only she could take care of the kingdom. Malhar Rao trained Ahilyabai in administrative and military matters, he had full faith in her ability and she did not let him down.

Proceed to Gwalior after crossing the Chambal. You may halt there for four or five days. You should keep your big artillery and arrange for its ammunition as much as possible….On the march you should arrange for military posts being located for protection of the road.

An excerpt from a letter that illustrates Malhar Rao's faith in Ahilyabai, in one of the most tumultuous period of Indian history. Malhar Rao passed away in 1766, and though her son Malerao, took over he was too weak a ruler and passed away the very next year. She petitioned the Peshwa to take over the reign of Malwa herself, as she had been trained in military and administration by then. Though some of the nobles objected to this, she had the full support of the Holkar army. On many occasions Ahilyabai had led the army herself from the front armed with bows and arrows on her elephant. The Peshwa granted her permission to rule in 1767, and she was ably assisted by Tukojirao Holkar, the commander in chief of the army and her adopted son too in a way. With Tukojirao advising her on military matters, Ahilyabai proceeded to rule over Malwa in a wise and sagacious manner. She never let personal rivalries affect her administration, once reinstated a Brahmin who had opposed her earlier. She never observed purdah, held daily durbars and was always accessible to the public.

Her first principle of government appears to have been moderate assessment, and an almost sacred respect for the native rights of village officers and proprietors of land. She heard every complaint in person; and although she continually referred cases to courts of equity and arbitration, and to her ministers for settlement, she was always accessible. So strong was her sense of duty on all points connected with the distribution of justice, that she is represented as not only patient but unwearied in the investigation of the most insignificant cases, when appeals were made to her decision." – Sir John Malcolm.

Ahilayabai ruled at a time, when the whole of Central India, Maharashtra, was facing power struggles one way or another, as well as intense battles being fought for the throne. It was to her credit, that during her 30 year long reign, Malwa was never once attacked and remained an oasis of stability and peace. While Indore developed under Ahilyabhai's reign, into a prosperous trading town, she also developed her own capital at Maheswar on the banks of the Narmada. She built many temples at Maheswar, a fort, a palace, repaired many ghats. She also built many forts, roads in Malwa, donated to temples and sponsored many Hindu festivals. She also built many temples, ghats, wells, tanks outside Malwa too all over India. Maheswar during her time, turned out to be a center for literature and arts. The famous Marathi poet Moropant, the shahir Anatapandhi was patronized by her as well as the Sanskrit scholar Khushali Ram. The textile industry flourished in Maheshwar during her reign, and the city is home to the famous Maheswari sari. She also patronized many craftsmen, sculptors, artistes who made the city their home. Trade was encouraged in the kingdom, and many merchants, farmers, cultivators rose to affluence during her time.

Ahilyabai treated her subjects like her own children, and invested a lot of money in public works. Trees were planted along roads, wells were dug and rest houses set up for travelers. She reached out to the poor and homeless, gave them shelter and dignity. When the Bhils were harassing the caravans she talked out with them, persuaded them to give up their nomadic lifestyle granted them land for cultivation. Her daily routine was quite simple, rose an hour before daybreak to say her prayers, read the scriptures, and distributed alms to Brahmins. After breakfast, she took a short break, and then attended durbar listening to people, settling disputes, taking decisions on administrative matters. A devout Shaivaite, she would mark Shri Shankara on all royal proclamations along with her signature.

While Ahilyabai built and also repaired many temples all over India, some of her more famous works are rebuilding the Kashi Viswanath temple after it was destroyed by Aurangzeb, there is also an Ahilya Ghat at Varanasi as well as the Ahilya Dwarkeswar temple. Apart from that she also repaired the Manikarnika, Dasasvamedh Ghats, built Dharamshalas there.

History, Importance and Rituals of Vinayaka Chavithi

Ganesh Chaturthi, also called Vinayaka Chavithi, is an auspicious Hindu festival which is celebrated for 10 days every year. The festival is celebrated in the Bhadra month as per the Hindu calendar which generally falls in mid-August to September. It marks the birthday of the beloved elephant-headed Lord Ganesha.

Ganesha is known as the God of wealth, sciences, knowledge, wisdom and prosperity, and that's why most Hindus remember him and seek his blessings before starting any important work. Lord Ganesh is known by 108 different names like Gajanana, Vinayaka, Vighnaharta among others.

This festival is celebrated with great devotion and joy by Hindus throughout the world. In India, it is majorly celebrated in states including Maharashtra, Gujarat, Goa, Madhya Pradesh, Karnataka, and Telangana.

Ganesh Chaturthi history

Ganesha is the younger son of Lord Shiva and Parvati. There are various stories behind his birth but two of them are the most common ones.

According to the first story, Lord Ganesha was created by Parvati out of dirt from her body to guard her in the absence of Shiva. She gave him the task of guarding her bathroom door while she took a bath. In the meantime, Shiva returned home and Ganesha, who didn't know who Shiva was, stopped him. This angered Shiva and he severed Ganesha's head after a tiff between the two. Parvati was enraged when she came to know about this; Lord Shiva, in turn, promised to get Ganesha back to life. The devas were sent to search for a child's head facing north but they could only find an elephant's head. Shiva fixed the elephant's head on the child's body, and that how Ganesha was born.

The other popular story is that the Devas requested Shiva and Parvati to create Ganesha so that he can be a Vighnakarta (creator of obstacles) for rakshasas (demons), thus being a Vighnaharta (averter of obstacles) and helping Devas.

Ganesh Chaturthi importance

It is believed that devotees who pray to Ganesha are able to fulfil their wishes and desires. So, the main essence of Ganesh Chaturthi is that devotees who pray to him are set free of sins and it leads them on the path of knowledge and wisdom.

Historically, the festival has been celebrated since the time of King Shivaji. It was during India's freedom struggle that Lokmanya Tilak changed Ganesh Chaturthi from a private celebration to a grand public festival where people from all castes of the society can come together, pray and be united.

Over the years with growing environmental awareness, people have started celebrating Ganesh Chaturthi in an environmentally friendly way. This includes-- getting Ganesha idols made of natural clay/ mitti and using only flowers and natural items for decorating the pandals.

Rituals of Vinayaka Chavithi

There are four main rituals which are performed during the 10-day long festival. They are namely-- Pranapratishhtha, Shhodashopachara, Uttarpuja, and Ganpati Visarjan.

The excitement of Ganesh Chaturthi settles in weeks before the festival actually begins. Artisans start preparing clay idols of Ganesha in different poses and sizes.

The Ganesha idols are installed in beautifully decorated 'pandal' at homes, temples or localities. The statue is also decorated with flowers, garlands and lights. A ritual called Pranapratishhtha is observed where a priest chants mantra to invoke life in the diety.

Prayers are then offered to Ganesha's idol in 16 different ways. This ritual is called Shhodashopachara.

People celebrate by singing or playing religious songs, dancing to drum beats and by lighting up fire-works-- all of which add to the festive mood. The Uttarpuja ritual is then performed which is about bidding farewell to Ganesha with deep respect. This is followed by Ganpati Visarjan, a ceremony wherein the statue is now immersed in water. While carrying the statue to the sea and while immersing it, people generally chant in the Marathi language 'Ganapati Bappa Morya, Purchya Varshi Laukariya' which means 'Goodbye Lord, please come back next year'.

While some devotees celebrate this festival at home, others pay their visit to Lord Ganesha at public pandals. People offer their due respect, prayers and offerings to Ganesha. Dishes like Lord Ganesha's favourite Modak, Pooran Poli, and Karanji are prepared for friends, family and visitors.

Janmashtami 2022: Date, Timing, History and its Significance

Janmashtami 2022 Date: The Hindu festival of Janmashtami, which is also known as Krishna Janmashtami, Krishnasthami, or Gokulashtami, marks the birth of Lord Krishna. Janmashtami 2022 will be widely celebrated in the cities of Mathura and Vrindavan, where Krishna is believed to have been born and spent his growing-up years. For the followers of Lord Krishna, Janmashtami is no less than a festival which usually celebrated by keeping fast and performing pooja.

Janmashtami 2022, like most of Indian festivals, includes the preparation and enjoyment of a delicious set of sweets and various other food items. On Janmashtami, people visit the temple and pray and honour Lord Krishna by re-enacting his life based on the books. Janmashtami 2022 is one of the widely celebrated festivals of the country and is enjoyed by everyone from children to elders.

On Janmashtami 2022, learn more about the day, its significance, and how India will be celebrating Krishna Janmashtami.

Janmashtami 2022 will be marked on the eighth day of the dark fortnight in the month of Bhadrapada (July-August) in India. This year, there has been a lot of confusion about whether Krishna Janmashtami will be celebrated on August 18 or August 19.

As per the Vedic Panchang, Ashtami Tithi will begin from 9.21 PM on August 18 and will end at 10.59 PM on August 19, 2022.

So, Janmashtami 2022 will be celebrated on both days while the Nishith Puja time will begin from 12.02 am on August 18 and ends at 12.48 PM on the same day.

What is the history of Dahi Handi?

As per Hindu Mythology, Lord Krishna loved curd, white butter, and milk during his childhood days. Krishna along with his friends used to steal it from the neighbours as well as other villagers. The villagers also went to his mother to complain about his habit of stealing. She advised villagers to hide the freshly churned makhan in an earthen pot at some height where little Krishna could not reach.

However, the idea did not work as Krishna and his friends started making human pyramids in order to reach the handi. To celebrate Krishna's mischievous tricks, every year on Janmashtami, people organize Dahi Handi and make a human pyramid to break the earthen pot kept at height.

Happy Krishna Janmashtami 2022: Top 10 GK Questions and Answers on Lord Krishna

Janmashtami History

As per the Hindu Mythology, Lord Krishna, the human incarnation of Vishnu, was born on this day to destroy Mathura's demon King, Kansa.

Krishna was born on the eighth day of the dark fortnight in the Bhadrapada month (August-September) in Mathura and was Devaki and Vasudeva's son.

Janmashtami is celebrated to give a message of light and positivity in dark times. When Krishna was born, Mathura was ruled by his uncle, Kansa, who wanted to kill his sister's children as a prophecy said that the couple's eighth son would cause Kansa's downfall. After the prophecy, he imprisoned Devaki and Vasudeva and killed off their first six children.

However, at the time of the birth of a seventh child, Balram, foetus mystically transferred from Devaki's womb to Princess Rohini's. When the eighth child Krishna was born, the entire palace went into slumber and Vasudeva rescued the baby to Nand Baba and Yashoda's house in Vrindavan.

After making the exchange, Vasudeva returned to the palace with a baby girl and handed her to Kansa. When he tried to kill the baby, she transformed into Durga and warned him about his impending doom. Krishna grew up in Vrindavan and later killed his uncle, Kansa.

How the festival is celebrated in India?

Janmashtami 2022 will be marked by the devotees by observing a fast and praying to Lord Krishna. They adorn their homes with flowers, diyas and lights while the temples are also beautifully decorated and lit.

The temples of Mathura and Vrindavan on Janmashtami 2022 will witness the most extravagant and colorful celebrations as Krishna is believed to have been born and spent his growing up years there. Devotees also perform Raslila to recreate incidents from Krishna's life and to commemorate his love for Radha.

Jagran Josh wishes its readers a very Happy Krishna Janmashtami.

वंचित आवासहीनों के लिए लागू होगी मुख्यमंत्री जन आवास योजना-मुख्यमंत्री

भोपाल। मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि राज्य शासन का संकल्प है कि प्रदेश की धरती पर कोई भी परिवार बिना जमीन और बिना घर के नहीं रहेगा, कोई भी गरीब इलाज से वंचित नहीं रहेगा, कोई मेधावी विद्यार्थी धन के अभाव में शिक्षा से वंचित नहीं रहेगा, कोई भी बच्चा बेसहारा नहीं रहेगा, कोई भी परिवार साफ पीने के पानी से वंचित नहीं रहेगा और कोई भी पात्र हितग्राही शासन की योजनाओं के लाभ से वंचित नहीं रहेगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने प्रदेश की जनता से इन क्षेत्रों में सरकार के साथ मिल कर काम करने की अपील की। उन्होंने कहा कि बेटी बचाना, नशा मुक्त समाज बनाना, ऊर्जा की बचत, पानी बचाना, पेड़ लगाना और स्वच्छता में सक्रियता से भाग लेना प्रत्येक प्रदेशवासी का कर्तव्य है। उन्होंने प्रदेशवासियों को अपने इन नागरिक कर्तव्यों का पालन करने के लिए प्रेरित किया। मुख्यमंत्री श्री चौहान मोतीलाल नेहरू स्टेडियम भोपाल में राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह को संबोधित कर रहे थे।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने मोतीलाल नेहरू स्टेडियम में आयोजित राज्य स्तरीय स्वतंत्रता दिवस समारोह में ध्वजारोहण किया। पुलिस बैंड की धुन के साथ राष्ट्र गान हुआ। मुख्यमंत्री श्री चौहान को परेड द्वारा सलामी दी गई। परेड कमांडर सहायक पुलिस आयुक्त भोपाल श्री अभिनय विश्वकर्मा के नेतृत्व में परेड में एसटीएफ, विशेष सशस्त्र बल उत्तरी जोन एवं दक्षिण जोन, जिला पुलिस बल, हॉक फोर्स, शासकीय रेल पुलिस, विशेष सशस्त्र बल, जिला बल का महिला दल, जेल विभाग, नगर सेना, एनसीसी सीनियर विंग गर्ल्स, एनसीसी सीनियर विंग बॉयस, गाईड गर्ल्स, स्काउट और पुलिस बैंड की टुकड़ियाँ शामिल हुई। मुख्यमंत्री श्री चौहान द्वारा स्वतंत्रता दिवस पर पदक अलंकरण समारोह में राष्ट्रपति द्वारा वीरता, विशिष्ट सेवा और सराहनीय कार्य के लिए प्रदत्त पदक पुलिस, होमगार्ड तथा जेल विभाग के अधिकारी-कर्मचारियों को प्रदान किए।

भारी वर्षा के बीच हुए परेड कार्यक्रम और अलंकरण समारोह को संबोधित करते हुए मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि ऐसा प्रतीत हो रहा है मानों प्रकृति मेघ मल्हार गाकर आजादी की वर्षगाँठ मना रही हो। तेज बारिश में अडिग खड़ी परेड के लिए मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि परेड में सम्मिलितों के धैर्य, संयम और संकल्प को देख कर यह विश्वास के साथ कहा जा सकता है कि दुनिया की कोई ताकत भारत माता की तरफ आँख उठाकर नहीं देख सकती। आजादी के अमृत काल में अमृत वर्षा की बूँदों के संगीत और पुलिस बेंड की धुन पर परेड सम्पन्न हुई।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने स्वतंत्रता दिवस पर प्रदेश में वंचित आवासहीनों को आवास उपलब्ध कराने 'मुख्यमंत्री जन आवास' योजना लागू करने की घोषणा की। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश की धरती पर कोई बेघर नहीं रहेगा। मुख्यमंत्री भू-अधिकार योजना में प्रत्येक व्यक्ति को आवास के लिए जमीन का टुकड़ा उपलब्ध कराया जाएगा। जहाँ आवश्यक होगा वहाँ हाईराइज बिल्डिंग बनाकर गरीबों को आवास उपलब्ध कराए जाएंगे। माफिया से मुक्त कराई गई लगभग 21 हजार एकड़ भूमि पर गरीबों के लिए 'सुराज कॉलोनियाँ' विकसित की जाएंगी। प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी के नेतृत्व में संचालित गरीब कल्याण योजनाओं से कोई भी पात्र व्यक्ति वंचित न रहे, इसके लिए प्रदेश में आगामी सितम्बर-अक्टूबर माह में विशेष अभियान चलाया जाएगा। प्रदेश में 18 सितम्बर 2022 तक पेसा एक्ट लागू कर दिया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि आजादी के अमृत महोत्सव के इस वर्ष में एक नवम्बर मध्यप्रदेश का स्थापना दिवस आनंद और प्रसन्नता के साथ मनाने के लिए एक सप्ताह तक गतिविधियाँ संचालित की जाएंगी।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने धार जिले के कारम मध्यम सिंचाई परियोजना के बांध के क्षतिग्रस्त हो जाने से बने संकट का सफलतापूर्वक सामना करने के लिए टीम मध्यप्रदेश को बधाई दी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि टीम मध्यप्रदेश में प्रदेश के मंत्रिगण, अधिकारी, जन-प्रतिनिधि और प्रदेश की जनता शामिल हैं। बांध पर आए संकट का जनता के सहयोग से जिस तरह से सामना किया गया वह डिजास्टर मैनेजमेंट का उत्कृष्ट उदाहरण है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने बांध में पोकलेन मशीन से बांध के पानी के लिए मार्ग बनाने वाले ड्राइवरों को सम्मानित करते हुए सम्मान निधि के रूप में प्रत्येक चालक को 2-2 लाख रूपये प्रदान करने की घोषणा की।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि 1761 में सन्यासी विद्रोह से आरंभ हुए स्वतंत्रता संघर्ष में अनेकानेक जननायकों ने अपना सर्वस्व न्यौछावर कर देश को आजादी दिलाई। प्रदेश की धरती पर शहीद चंद्रशेखर आजाद, भीमा नायक, रानी दुर्गावती, महारानी लक्ष्मीबाई, रानी आवंतीबाई और शंकरशाह-रघुनाथ शाह ने अपने प्राणों की आहुति दी। देश को अंग्रेजों की पराधीनता से मुक्त कराने के लिए विजयादशमी के दिन स्वराज का अलख जगाने वाले डॉ. हेडगेवार ने अपना सारा जीवन देश को समर्पित कर दिया। डॉ. हेड़गेवार की अनेक स्मृतियाँ बालाघाट जिले के रामपायली से जुड़ी हैं। बालाघाट जिले में उनकी स्मृतियों को चिरस्थाई बनाने के लिए स्मारक बनाया जाएगा।

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने भारत भूमि के समृद्ध अतीत पर अपने विचार व्यक्त करते हुए कहा कि प्रधानमंत्री श्री मोदी के नेतृत्व में देश प्रगति के नये आयाम स्थापित कर रहा है। आत्म-निर्भर भारत की दिशा में आत्म-निर्भर मध्यप्रदेश के निर्माण के लिए भी राज्य सरकार की ओर से हरसंभव प्रयास जारी है। प्रदेश की आर्थिक वृद्धि दर 19.74 प्रतिशत के साथ देश में अग्रणी है। पिछले दो वर्षों में प्रदेश के पूँजी गत व्ययों में लगभग 45 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेशवासियों को मूलभूत सुविधाएँ उपलब्ध कराने के साथ गुणवत्तापूर्ण शिक्षा के लिए सर्वसुविधायुक्त सी.एम. राईज स्कूल स्थापित किए जा रहे हैं। सबको स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध हों, इसके लिए 2 करोड़ 78 लाख आयुष्मान कार्ड उपलब्ध कराए गए हैं। साथ ही मुख्यमंत्री स्वेच्छानुदान से भी इलाज की व्यवस्था जारी है।

राजभवन में स्वतंत्रता दिवस पर हुआ स्वागत समारोह

भोपाल। स्वतंत्रता दिवस पर राजभवन में स्वागत समारोह का आयोजन किया गया। राज्यपाल श्री मंगुभाई पटेल और मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने आगंतुकों के बीच पहुँच कर स्वतंत्रता दिवस की शुभकामनाओं का आदान-प्रदान किया।

स्वागत समारोह में मुख्यमंत्री की पत्नी श्रीमती साधना सिंह, महापौर भोपाल श्रीमती मालती राय, मुख्य सचिव श्री इकबाल सिंह बैंस, पुलिस महानिदेशक श्री सुधीर सक्सेना, न्यायाधीश, आयोगों के पदाधिकारी, पद्म पुरस्कारों से सम्मानित गणमान्य नागरिक, निगम-मंडलों के अध्यक्ष, विश्वविद्यालयों के कुलपति, विभिन्न धर्मों के धर्मगुरु, सेना, पुलिस और प्रशासन के वरिष्ठ अधिकारी, राजनैतिक एवं सामाजिक संगठनों के पदाधिकारी, जन-प्रतिनिधि, प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा मन की बात में उल्लेखित प्रतिभाएँ, 'स्वाधीनता आंदोलन में जनजातियों की भूमिका' निबंध प्रतियोगिता के विजेता छात्र, प्रावीण्य सूची में स्थान पाने वाले विद्यार्थी, कलाकार, स्वच्छता आग्रही, ओलिंपिक एवं कॉमनवेल्थ गेम में प्रतिभागिता करने वाली खेल प्रतिभाएँ और संघ लोक सेवा परीक्षा में चयनित प्रतियोगी आदि शामिल हुए।

अमेरिका में दिखा 'बाबा का बुलडोजर', भारतीय अमेरिकी समुदाय ने स्वतंत्रता दिवस मनाने के लिए निकाली रैली

नई दिल्ली। देश के 75वें स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर, विदेशी सरजमीं पर भी भारतीयों की देशभक्ति देखने को मिली है। अमेरिका के न्यू जर्सी में रहने वाले भारतीयों ने स्वतंत्रता दिवस के अवसर पर सड़कों पर तिरंगा रैली निकाली। सोशल मीडिया पर शेयर किए गए वीडियो में भारतीयों को बड़ी संख्या में गर्व के साथ तिरंगा लहराते देखा जा सकता है। इस अवसर पर न्यूजर्सी महासभा के अध्यक्ष क्रेग जे. कफलिन भी शामिल हुए।अपने अनुभव को साझा करते हुए उन्होंने कहा, 'हालांकि भारत की कहानी अमेरिका के कई साल बाद हुई, लेकिन स्वतंत्रता और लोकतंत्र के हमारे साझा विचार हमें एकजुट करते हैं। जैसा कि मैं खड़ा हूं, मुझे याद आ रहा है कि कैसे भारतीय अमेरिकियों ने न्यू जर्सी के सकारात्मक विकास में योगदान दिया है।'न्यू जर्सी डिस्ट्रिक्ट 18 के असेंबलीमैन रॉब काराबिंचक भी एडिसन की 18वीं इंडिया डे परेड मनाने के लिए भारतीयों के साथ शामिल हुए।

सिरपुर तालाब के बाद यशवंत सागर भी हुआ रामसर साइट की सूची में शामिल

इंदौर। इंदौर के यशवंत सागर को रामसर साइट के रूप में मान्यता मिली है। यह इंदौर का दूसरा व प्रदेश का चौथा जलाशय हो गया है, जिसे इस वर्ग में शामिल किया गया है। इसके पूर्व 3 अगस्त को इंदौर के सिरपुर तालाब को रामसर साइट की सूची में शामिल किया गया था। शनिवार को केंद्रीय पर्यावरण, वन एवं जलवायु परिवर्तन मंत्रालय ने इंदौर के यशवंत सागर को रामसर साइट की सूची में शामिल किए जाने की घोषणा की।

वर्ष 1900 में तुकोजीराव तृतीय ने बनवाया था - यशवंत सागर जलाशय दो हजार एकड़ में फैला है। गंभीर नदी के पानी को रोककर बांध बनाया गया है, जिसके कारण यशवंत सागर का निर्माण हुआ। होलकर महाराजा तुकोजीराव तृतीय ने इंदौर के पश्चिमी हिस्से में जलापूर्ति के लिए यह जलाशय वर्ष 1900 में बनवाया था। उन्होंने अपने बेटे यशवंतराव द्वितीय के नाम पर इसका नामकरण किया था। वर्ष 1992 में इसे प्रमुख पक्षी क्षेत्र बनाया गया था। वर्ष 2017 से इसे रामसर साइट में शामिल करवाने के प्रयास जारी थे। यशवंत सागर पर सारस काफी संख्या में मिलते हैं। यह सारस का पर्यावास है। इसके अलावा यहां अन्य प्रवासी पक्षी आते हैं। तालाब में मछली पालन भी होता है।

30 एमएलडी पानी शहर को प्रतिदिन मिलता है - यशवंत सागर के पानी को ट्रीट कर उस पानी को पश्चिमी क्षेत्र की कालोनियों को दिया जाता है। इस तालाब से प्रतिदिन 30 एमएलडी पानी सप्लाई किया जाता है। इस तालाब में सालभर पानी रहता है। यह इंदौर का पर्यटन स्थल भी है। इस वजह से सालभर यहां काफी संख्या में लोग घूमने आते हैं। वर्षा काल में काफी संख्या में पर्यटक आते हैं। पहले यशवंत सागर में सायफन हुआ करते थे। वर्ष 2013 में यहां बांध बनवाया गया। यशवंत सागर की कुल क्षमता 19 फीट है। वर्षा काल में पानी बढ़ने पर बांध के गेट खोले जाते हैं। गरमी में जल स्तर 12 फीट तक पहुंच जाता है। नगर निगम द्वारा यशवंत सागर की पाल पर रिटेनिंग वाल बनाने, स्टोन पीचिंग करवाने व रोड किनारे जाली लगाने की योजना है।

बांधों के लबालब होने से बनी भरपूर बिजली... घटी कोयले की खपत

भोपाल। समूचे मध्यप्रदेश में भरपूर बारिश होने से बरगी, इंदिरा सागर, ओंकारेश्वर, गांधी सागर सहित आठ बांध लबालब की स्थिति में आ गए हैं। इससे यहां पानी से बनने वाली यानी पनबिजली भरपूर पैदा हो रही है। इसी कारण प्रदेश में रोज 7 रैक कोयला बिजली बनाने में कम लग रहा है। प्रदेश में औसत बिजली की मांग 10 से 11 हजार मेगावाट रहती है। बिजली की मांग अलग-अलग सीजन व खपत के अनुसार हर मौसम में कम-ज्यादा होती रहती है। प्रदेश में अधिकतम बिजली मांग 16 हजार मेगावाट और न्यूनतम मांग लगभग साढ़े 8 हजार मेगावाट रहती है, जिसमें कृषि की मांग भी शामिल हैं, लेकिन इन दिनों बारिश ज्यादा होने से कृषि की मांग शून्य स्तर पर आ गई है। साथ ही औद्योगिक मांग में भी कमी आई है। घरेलू बिजली की मांग भी मई-जून की तुलना में 20 फ़ीसदी कम हुई है। इसके कारण भी कोयले से बिजली की आवश्यकता घटी है और बांधों के पानी से ही आधे मध्यप्रदेश को रोशन करने जितनी बिजली बन रही है।

25 रैक रोजाना कोयले की खपत-बिजली की खपत प्रदेश में सर्वाधिक स्तर पर पहुंचती है उस समय रोजाना तकरीबन 25 रेक(मालगाड़ी) कोयला लगता है यही मांग न्यूनतम स्तर पर होने पर 12 से 15 मालगाड़ी लगती है, लेकिन वर्तमान में बिजली बांध के लबालब होने से ज्यादा मात्रा में बिजली उत्पादित हो रही है इसलिए कोयले से बिजली न्यूनतम बन रही है।

इंदौर के अमन गूगल की गलतियां निकालकर हर साल करोड़ों रुपये कमा रहे

इंदौर। इंदौर के युवा बिजनेसमैन अमन पांडेय ने गूगल के एंड्राइड-13 फोन की लॉन्चिंग से पहले ही उसमें 49 बग्स (49 गलतियां) निकाल डाली। इसके लिए गूगल ने उन्हें करोड़ रुपये इनाम के तौर पर दिए हैं। इसमें यूजर के लिए दो बग बेहद ही खतरनाक थे। एंड्रॉयड 13 में बिना आपके परमिशन के ही कोई भी लोकेशन हासिल कर सकता था। इसके बाद आपको ट्रैक कर सकता था। अमन देश के ऐसे पहले युवा हैं जिन्होंने गूगल थर्टीन में सबसे ज्यादा बग्स निकाले हैं। इसके पहले भी वे गूगल की गलतियां निकाल करोड़ों रुपये इनाम में प्राप्त कर चुके हैं।

अमन पांडेय इंदौर में 'बग्स मिरर' नाम की कंपनी चलाते हैं। अमन अपनी शुरुआती पढ़ाई पतरातू में की। इसके बाद बोकारो स्थित चिन्मया विद्यालय से 12वीं तक की पढ़ाई की। अमन ने भोपाल से एनआईटी से बीटेक किया है। बीटेक करने के बाद अमन ने जनवरी 2021 में बग्स मिरर कंपनी की शुरुआत की थी। अमन ने बताया कि गूगल ने अपने गूगल 13 फोन को लांच करने से पहले हमें रिसर्च करने के लिए दिया था। फोन पर रिसर्च करने दौरान हमारी टीम ने 49 बग्स (गलतियां) फोन में ढूंढ़ निकाली है। जिसके लिए उन्हें गूगल ने कोरोड़ रुपए इनाम के तौर पर दिया है।

हर साल तलाशते है गूगल की गलतियां-अमन का कहना है कि गूगल हर वर्ष अपने उत्पादों में बग्स तलाशने के लिए इस तरह का प्रोग्राम चलाता है। 2021 में भी गूगल ने एक प्रोग्राम के तहत अपनी कमियां तलाश की थी। तब गूगल ने अपने सभी सेवाओं में बग रिपोर्ट करने के लिए 87 लाख डालर का इनाम दिया था। इसमें एंड्राइड वल्नरेबिलिटी रिवार्ड प्रोग्राम (वीआरपी) भी शामिल है। इसमें दुनियाभर से मेरे जैसे करीब 100 तकनीकी जानकारों ने हिस्सा लिया था। इन सभी जानकारों को उपहार स्वरूप 65 करोड़ रुपये का इनाम गूगल की ओर से दिया गया था।

हर्षोल्लास से मना स्वतंत्रता दिवस

भोपाल। आयुक्त जनसम्पर्क श्री राघवेन्द्र कुमार सिंह ने 76वें स्वतंत्रता दिवस पर जनसम्पर्क संचालनालय में ध्वजारोहण किया। ध्वजारोहण के बाद राष्ट्रगान का सामूहिक गायन किया गया। इस दौरान संचालक जनसम्पर्क श्री आशुतोष प्रताप सिंह, अपर संचालक श्री सुरेश गुप्ता और श्री एच.एल. चौधरी एवं अन्य अधिकारी उपस्थित थे।

इन्दौर। गृह और इंदौर जिले के प्रभारी मंत्री डॉ. नरोत्तम मिश्रा ने आजादी के अमृत महोत्सव पर इंदौर में ध्वजारोहण कर तिरंगे को सेल्यूट किया और भव्य परेड की सलामी ली। डॉ. मिश्रा ने रूस्तमजी आर्म्ड पुलिस ट्रेनिंग कॉलेज (आरएपीटीसी) ग्राउंड में आयोजित मुख्य समारोह में परेड की सलामी ली। उन्होंने सभी को आजादी की 75वीं वर्षगाँठ पर बधाई और शुभकामनाएँ दीं। मंत्री डॉ. मिश्रा ने समारोह में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के संदेश का वाचन किया।

छिंदवाड़ा। किसान-कल्याण तथा कृषि विकास और छिंदवाड़ा जिले के प्रभारी मंत्री श्री कमल पटेल ने आजादी के अमृत महोत्सव पर जिला मुख्यालय छिंदवाड़ा में आयोजित भव्य समारोह में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। उन्होंने सभी को आजादी की 75वीं वर्षगांठ पर बधाई और शुभकामनाएँ दी। मंत्री श्री पटेल ने समारोह में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान के संदेश का वाचन किया। कार्यक्रम में स्कूली विद्यार्थियों द्वारा देशभक्ति से ओतप्रोत रंगारंग सांस्कृतिक कार्यक्रम प्रस्तुत किये गये।

शाजापुर। लोक स्वास्थ्य यांत्रिकी राज्य मंत्री एवं शाजापुर जिले के प्रभारी मंत्री श्री बृजेन्द्र सिंह यादव ने आजादी के अमृत महोत्सव पर शाजापुर में ध्वजारोहण कर तिरंगे को सेल्यूट किया। राज्य मंत्री श्री यादव ने स्टेडियम ग्राउंड में आयोजित मुख्य समारोह में परेड का निरीक्षण कर सलामी ली। उन्होंने जिलेवासियों को आजादी की 75वीं वर्षगाँठ पर बधाई और शुभकामनाएँ दी। प्रभारी मंत्री श्री यादव ने समारोह में मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान का प्रदेश की जनता के नाम संदेश का वाचन भी किया।

सागर। नगरीय विकास एवं आवास मंत्री श्री भूपेन्द्र सिंह ने 76वें स्वतंत्रता दिवस पर सागर में आयोजित मुख्य समारोह में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। श्री सिंह ने मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन भी किया। मंत्री श्री सिंह ने स्वतंत्रता दिवस समारोह में स्वतंत्रता सेनानियों और मीसाबंदियों को शॉल-श्रीफल देकर सम्मानित किया। श्री सिंह ने महारानी लक्ष्मीबाई कन्या विद्यालय में छात्राओं के साथ मध्यान्ह भोजन किया।

झाबुआ। स्कूल शिक्षा (स्वतंत्र प्रभार) और सामान्य प्रशासन राज्य मंत्री एवं झाबुआ जिले के प्रभारी मंत्री श्री इंदर सिंह परमार ने झाबुआ में स्वतंत्रता दिवस मुख्य समारोह में ध्वजारोहण किया। राज्य मंत्री श्री परमार ने मुख्यमंत्री के संदेश का वाचन कर परेड निरीक्षण किया और सलामी ली। समारोह में छात्र-छात्राओं ने देश-भक्ति से ओतप्रोत सांस्कृतिक कार्यक्रम और जनजातीय नृत्य की प्रस्तुति दी। इस अवसर पर सांसद श्री गुमानसिंह डामोर, कलेक्टर श्री सोमेश मिश्रा, पुलिस अधीक्षक श्री अरविंद तिवारी उपस्थित रहे।

रतलाम। जिले में 15 अगस्त को स्वतंत्रता दिवस गरिमा एवं हर्षोल्लास के साथ मनाया गया। इस अवसर पर ध्वजारोहण किया गया। जिला मुख्यालय पर मुख्य समारोह नेहरू स्टेडियम पोलो ग्राउंड पर आयोजित हुआ। मुख्य समारोह में जिले के प्रभारी मंत्री श्री ओ.पी.एस. भदौरिया मुख्य अतिथि थे।

प्रभारी मंत्री ने मुख्य समारोह में ध्वजारोहण कर परेड की सलामी ली। इस दौरान विधायक श्री चैतन्य काश्यप, डॉ. राजेंद्र पांडे, श्री दिलीप मकवाना, कलेक्टर श्री नरेंद्र सूर्यवंशी, उप महानिरीक्षक पुलिस रतलाम रेंज श्री सुशांत सक्सेना, अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक श्री सुनील पाटीदार, एसडीएम श्री संजीव पांडे उपस्थित थे।

समृद्ध और सुरक्षित भारत के लिए हर व्यक्ति को अपने स्तर पर करना होगा प्रयास-योगी

देश को आजाद हुए 75 वर्ष हो गए हैं। इसी कड़ी में उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ने आजादी के अमृत महोत्सव कार्यक्रम में भाग लिया। उन्होंने लखनऊ में तिरंगा बाइक रैली को हरी झंडी पर दिखाई। इस अवसर पर योगी आदित्यनाथ ने कहा कि एक समृद्ध और सुरक्षित भारत के लिए हर किसी को अपने स्तर पर प्रयास करना होगा। अपने संबोधन में योगी ने कहा कि प्रधानमंत्री जी ने आगामी 25 वर्षों के लिए एक अमृत काल हम सभी के सामने निर्धारित किया है, कि आगामी 25 वर्षों के लिए हमारी कार्ययोजना क्या होगी? हमें अपने भारत को कहां ले जाना है?

योगी आदित्यनाथ ने कहा कि एक समृद्ध और सुरक्षित भारत के लिए हर व्यक्ति को अपने स्तर पर प्रयास करना होगा। अपनी-अपनी जिम्मेदारियों का निर्वहन करना होगा। ईमानदारी के साथ किए गए प्रयास, सार्थक परिणाम हमारे सामने प्रस्तुत करेंगे। इससे पहले योगी आदित्यनाथ ने देश के वीर जवानों की सराहना करते हुए कहा था कि देश के

लिए जब भी उन्हें सर्वोच्च बलिदान देने की आवश्यकता पड़ी, तो उन्होंने कभी संकोच नहीं किया। उन्होंने कहा, "वैश्विक मंच पर भी भारत के जवान शांति एवं सुरक्षा की स्थापना के लिए अपने शौर्य एवं पराक्रम का परिचय देते हैं। हमारे जवान हमेशा देश के बारे में सोचते हैं। जब भी उन्हें सर्वोच्च बलिदान देने की आवश्यकता पड़ी, तो उन्होंने कभी संकोच नहीं किया।

योगी ने देश के जवानों से कहा से कहा कि दुश्मन के लिए आप जितने सख्त हैं, अपने देश पर आने वाली किसी भी आपदा के दौरान आप उतने ही संवेदनशील हैं। उन्होंने कहा कि वीर जवानों, उनके परिवारों तथा वीर माताओं को सम्मानित करने के इस कार्यक्रम से जुड़कर उन्हें अत्यंत गौरव की अनुभूति हुई है। योगी ने कहा कि आजादी के बाद भी भारत की सुरक्षा, एकता एवं अखण्डता को अक्षुण्ण बनाए रखने के लिए 1947-48, 1962, 1971 तथा 1999 में हुए युद्धों से देश को जूझना पड़ा था। अनेक अन्य अवसरों पर भी भारत के बहादुर जवानों ने देश की एकता एवं अखण्डता को बनाए रखते हुए उसकी स्वाधीनता की रक्षा करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

मोदी सरकार के दौरान घटी राष्ट्रपति-उपराष्ट्रपति की औसत उम्र

नई दिल्ली। रामनाथ कोविंद और द्रौपदी मुर्मू के राष्ट्रपति बनने से पहले औसत उम्र 71.9 वर्ष थी। मुर्मू के राष्ट्रपति बनने के बाद यह घटकर 71.4 वर्ष हो गई। राष्ट्रपति का पद ग्रहण करने वाले सबसे उम्रदराज 1894 में जन्मे वीवी गिरि थे, जो 75 वर्ष की आयु के थे।प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के कार्यकाल के बाद से देश के राष्ट्रपतियों व उपराष्ट्रपतियों की औसत उम्र में कमी आई है। सबसे कम उम्र में द्रौपदी मुर्मू देश की राष्ट्रपति बन चुकी हैं। उन्होंने पिछले 40 साल का रिकॉर्ड तोड़ दिया है। वहीं पूर्व उपराष्ट्रपति वेंकैया नायडू 10 अगस्त को सेवानिवृत्त हुए। ऐसे में वह भी 1979 के बाद सेवानिवृत्त होने वाले सबसे कम उम्र के उपराष्ट्रपति थे।दरअसल, रामनाथ कोविंद और द्रौपदी मुर्मू के राष्ट्रपति बनने से पहले औसत उम्र 71.9 वर्ष थी। मुर्मू के राष्ट्रपति बनने के बाद यह घटकर 71.4 वर्ष हो गई। वहीं, अगर उनके पांच साल के कार्यकाल को ध्यान में रखा जाए, तो राष्ट्रपतियों की औसत सेवानिवृत्ति की उम्र मौजूदा 76.8 से घटकर 76.3 साल हो जाएगी। बता दें, पद ग्रहण करने वाले सबसे उम्रदराज राष्ट्रपति 1894 में जन्मे वीवी गिरि थे, 75 वर्ष की आयु के थे।

चीन की सैन्य गतिविधियों पर चिंता व्यक्त करने के लिए ताइवान ने भारत का किया शुक्रिया

ताइवान ने उस सभी देशों के प्रति आभार व्यक्त किया है जिन्होंने ताइवान जलडमरूमध्य में चीन के हालिया सैन्य अभ्यास के बारे में अपनी गंभीर चिंता व्यक्त की है। बता दें कि अमेरिकी हाउस स्पीकर नैन्सी पेलोसी के ताइवान की राजधानी का दौरा करने के बाद गुस्से में चीन ने ताइवान के सीमा के पास अब तक का सबसे बड़ा सैन्य अभ्यास किया था।

ताइवान ने कहा कि वह दुनिया भर के देशों के साथ दोस्ती बनाने और संबंध बनाए रखने का हकदार है। ताइवान 'वन-चाइना' सिद्धांत की धोखाधड़ी और खाली झूठ को खारिज करता है। ताइवान ने कहा 'हम सभी देशों से आग्रह करते हैं कि वे स्वतंत्रता और लोकतंत्र के मूल्यों की रक्षा के उद्देश्य से लोकतांत्रिक ताइवान के समर्थन में बोलना जारी रखें, ताकि नियम-आधारित अंतर्राष्ट्रीय व्यवस्था बनाए रखी जा सके।' ताइवान की सरकार ने भारत समेत 50 देशों पर आभार व्यक्त किया।

नेताजी के अवशेषों को लाया जाए भारत, प्रियंका चतुर्वेदी ने मोदी से की अपील

नई दिल्ली। शिवसेना सांसद प्रियंका चतुर्वेदी ने प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी से नेताजी सुभाष चंद्र बोस के अवशेषों को भारत वापस लाने की अपील की। उन्होंने प्रधानमंत्री मोदी और विदेश मंत्रालय को पत्र लिख यह अपील की है। आपको बता दें कि नेताजी की बेटी अनिता बोस फाफ ने सरकार से यही मांग की थी। उन्होंने कहा था कि नेताजी के अवशेषों को जापान से भारत लाया जाएं।

इसी बीच प्रियंका चतुर्वेदी ने अनिता बोस फाफ का उल्लेख करते हुए प्रधानमंत्री मोदी और विदेश मंत्रालय को पत्र लिखा। उन्होंने पत्र में लिखा कि हम आजादी का अमृत महोत्सव मना रहे हैं और स्वतंत्रता सेनानियों को याद कर रहे हैं। नेताजी के अवशेषों को भारत लाया जाता है तो ये उनके बलिदान और देश के लिए किए गए समर्पण को लेकर सच्ची श्रद्धांजलि होगी।

उन्होंने कहा कि भारत की धरती पर लौटने की उनकी अंतिम इच्छा को पूरा करके भारत की स्वतंत्रता के प्रति नेताजी के बलिदान और समर्पण को याद करना हमारे लिए सबसे बड़ा सम्मान होगा। मैं आपसे अनुरोध करती हूं कि आप अनीता बोस फाफ के अनुरोध को नोट कर लें और नेताजी के अवशेषों को घर लाने के लिए ऐसे सभी राजनयिक और अन्य उपाय शीघ्रता से करें और भारत के स्वतंत्रता संग्राम में उनके दुर्गम योगदान को स्वीकार करें।

प्रियंका चतुर्वेदी ने आगे कहा कि यह वास्तव में हमारे पूर्वजों को सच्ची श्रद्धांजलि होगी जिन्होंने भारत की आजादी के लिए अपने प्राणों की आहुति दे दी। दरअसल, नेताजी की बेटी ने सरकार से अपील की थी कि जापान में मौजूद नेताजी के अवशेषों को भारत लाया जाए और उनका डीएनए टेस्ट कराया जाए।

जीएसटी की वजह से गड़बड़ाया घर का बजट

भोपाल। लोग पहले से ही महंगी चीजों से परेशान थे। लेकिन अब जीएसटी ने लोगों की मुश्किल को बढ़ा दिया है। क्योंकि तकरीबन सभी वस्तुएं जीएसटी के दायरे में आ गई हैं। ऐसे में आम लोगों पर इसका असर पड ?ा शुरू हो गया है। जीएसटी की वजह से हर घर का खर्च 10 से 15 फीसद बढ़ गया है। जबकि इस अनुपात में लोगों की आय नहीं बढ़ी है। हाल ही में सरकार ने प्रीपैक्ड प्रोडक्ट पर 5 फीसदी जीएसटी लागू किया है। पहली बार चावल और आटा के साथ डेयरी प्रोडक्ट दही, लस्सी, छाछ व घी जैसी चीजों को जीएसटी के दायरे में लाने से लोग परेशान हो गए हैं। जीएसटी के दायरे में आने से स्टेशनरी की कीमतों में काफी इजाफा हो गया है। 10 रुपए में मिलने वाला पेन अब 15 रुपए में बिक रहा है। साथ ही पेंसिल, कॉपी यहां तक कि सेलो टेप भी महंगा हो गया है। 12 से 18 फीसदी तक जीएसटी लगने से स्टेशनरी प्रोडक्ट के दाम 25 से 30 फीसदी तक बढ़ चुके हैं। स्टेशनरियों कारोबारियों का कहना है कंपनियों ने दाम बढ़ा दिए हैं। स्टेशनरी का सामान महंगा होने से आमजन की परेशानियां बढ़ गई हैं और वे लिमिटेड सामान ही खरीद रहे हैं।

रेलवे 75 वर्ष से अधिक उम्र वाले सेवानिवृत्त कर्मियों के लिए जारी करेगा 'आजादी पास'

मुरादाबाद। रेलवे अपने 75 साल के अधिक उम्र वाले सेवानिवृत्त कर्मचारियों के लिए आजादी पास जारी करेगा। यह पास सेवाकाल में बेहतर कार्य करने वाले उन सेवानिवृत्त रेल कर्मचारियों को दिए जाएंगे, जिनकी उम्र 75 वर्ष से अधिक हो गई है। एक पास पर एसी द्वितीय श्रेणी में दो यात्रियों के सफर की सुविधा मिलेगी।

उल्लेखनीय है कि कोरोना संक्रमण के बाद रेलवे ने निशुल्क या रियायती दर पर सफर करने वाले अधिकांश पास बंद कर दिए हैं। रेलवे की आर्थिक स्थिति ठीक नहीं होने के कारण ये पास फिर से शुरू नहीं किए जाएंगे। रेल प्रशासन द्वारा आजादी के अमृत महोत्सव को लेकर विभिन्न प्रकार के कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं। इसी कड़ी में स्वतंत्रता दिवस पर रेलवे प्रशासन ने आजादी पास जारी करने की घोषणा की है।

इसके साथ ही 75 वर्ष की उम्र के हो चुके सेवानिवृत्त अधिकारी व कर्मचारी जिसने सेवाकाल में बेहतर प्रदर्शन किया है, उसे यह पास देकर सम्मानित किया जाएगा। यह सम्मान मंडल रेल प्रबंधक से लेकर रेलवे मंत्री तक किया जाना है। रेलवे बोर्ड चेयरमैन द्वारा सम्मानित होने वाले मुरादाबाद रेल मंडल के कई सेवानिवृत्त अधिकारी व कर्मचारी का भी नाम शामिल है।

रेलवे बोर्ड के उप निदेशक (हित) वी मुरलीधरन ने 11 अगस्त को पत्र जारी किया है। सम्मानित होने वाले कर्मचारियों को आजादी पास दिया जाएगा। जिसकी मान्यता 15 दिन होगी। आजादी पास से एसी टू में सेवानिवृत्त कर्मचारी के साथ एक सहयोगी सफर कर सकेगा। साल में एक बार या विशेष आयोजन पर बुलाए जाने पर यह पास उपलब्ध कराया जाएगा। आजादी पास से किसी भी ट्रेन में सफर करने की सुविधा उपलब्ध होगी।

रेलवे के कार्यक्रम में जाने वाले सेवानिवृत्त अधिकारियों व कर्मचारियों के ठहरने व खाने की व्यवस्था भी होगी। सेवानिवृत्त अधिकारियों को साल में तीन और कर्मचारियों को दो पास एसी श्रेणी में सफर करने को मिलते हैं। आजादी पास इन पास को प्रभावित नहीं करेगा। जबकि अन्य पास से राजधानी व शताब्दी एक्सप्रेस में कुछ पाबंदी होती है।

मुद्रक एवं प्रकाशक संजय अग्रवाल द्वारा गोल्ड कॉइन सेवा ट्रस्ट के पक्ष में राजा ऑफसेट प्रिंटर्स, 863/9, नेहरू नगर, इंदौर (म.प्र.) से मुद्रित तथा 54-55, चाणक्यपुरी, अन्नपूर्णा रोड, इंदौर (म.प्र.) से प्रकाशित। संपादक : संजय अग्रवाल* (*पीआरबी एक्ट के तहत समाचार चयन के लिए जिम्मेदार)